International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(III), January - March, 2022, pp.117-120

कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. आभा शर्मा*
शकुन्तला दर्जी**

सार

कच्ची बस्तियों में रहने वाले किशोर बालक–बालिकाओं में शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन और उत्थान की अनेकों समस्या बनी रहती है। प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना। सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों के समायोजन का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध कार्य में 600 किशोर विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। दत्त संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित 'मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण एवं ए.के.पी. सिन्हा एवं आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित 'समायोजन मापनी' का प्रयोग किया गया। दत्तों के विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण कर टी–परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं। निष्कर्ष में पाया कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया।

शब्दकोश: *मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन।*

प्रस्तावना

निर्धनता के निवारण हेतु ग्रामीण आबादी रोजगार की तलाश में नगरों में आ रही हैं। जिससे नगरों में आवासीय समस्या उत्पन्न हो गई है। औद्योगिक नगरों में जनसंख्या का दबाव अत्यधिक बढ़ गया है। कच्ची बस्तियाँ औद्योगिक नगरों एवं महानगरों की ही उपज है। इन नगरों में व्यक्ति को रोजगार तो मिल जाता है, परन्तु रहने को आवास नहीं मिलता। इन नगरों में निर्धन व्यक्तियों को कच्ची बस्तियों में ही शरण मिलती है। कच्ची बस्तियाँ वर्तमान में विकराल रूप लेती जा रही हैं। व्यक्ति रोजी रोटी कमाने हेतु मिलों, फैक्ट्रियों, मजदूरी आदि कार्य करके अपना गुजर–बसर कर रहे हैं। निम्न आय के वजह से जहाँ भी इन्हें खाली स्थान मिलता है वहीं पर यह अपनी झोपड़ी बना लेते हैं। वहाँ पर मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है। फलस्वरूप इन बस्तियों का

* प्राचार्य (शिक्षा विभाग), महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** पीएच. डी. शोधार्थी, महात्मा ज्योतिराव फूले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

वातावरण बहुत ही प्रदूषित रहता है। अतः कच्ची बस्तियों में रहने वाले किशोर बालक–बालिकाओं में शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन और उत्थान की अनेकों समस्या बनी रहती है। शोधकर्त्री द्वारा ''कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' करना चाहती है। जिससे कच्ची बस्ती में निवास करने वाले किशोर बालक–बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का पता लगाया जा सके तथा अपेक्षित सुधार का प्रयास किया जा सके।

अध्ययन का औचित्य

प्रत्येक बालक किसी न किसी सामाजिक वातावरण में रहता है। इस वातावरण से ही उसकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। बालक के चारों ओर के वातावरण में उपस्थित व्यक्ति और वस्तुएँ समान रूप से महत्त्वपूर्ण नहीं होती है। इनमें से कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण होती हैं और कुछ कम। बालक की इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति कभी सरल ढ़ंग से हो जाती है और कभी उसकी इस प्रकार की पूर्ति में कुछ न कुछ बाधा पड़ती है या समय अधिक लगता है। जब उसकी पूर्ति में समय अधिक लगता है या बाधा पड़ती है तब उसमें तनाव उत्पन्न हो जाता है, वह कभी क्रोधित होता है, कभी दुःखी और निराशा का अनुभव करता है।

अतः प्रस्तुत शोध कार्य ''कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' शिक्षा के क्षेत्र में किया जाने वाला शोध कार्य व्यापक महत्त्व एवं औचित्यपूर्ण है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष नीति निर्माताओं, समाज, अभिभावकों, शिक्षण संस्थाओं एवं विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण होगा।

शोध के उद्देश्य

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर एवं किशोरियों के समायोजन का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में जयपुर शहर के कच्ची बस्ती के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी एवं निजी विद्यालयों के कुल विद्यार्थियों में से 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में किया गया है। जिसमें सरकारी विद्यालय के 300 विद्यार्थी एवं निजी विद्यालय के 300 विद्यार्थी हैं।

शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्न मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

- **मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण–** अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा निर्मित 'मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण' (डभ्ठे.) मानकीकृत उपकरण।
- **समायोजन–** ए.के.पी. सिन्हा एवं आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित 'समायोजन मापनी' (ैै.) मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

शोध की सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने अपने शोध कार्य के परिणामों व निष्कर्षों को प्राप्त करने के लिए मध्यमान (Mean), प्रमाप विचलन (Standard Deviation) एवं टी–परीक्षण (t-Test) सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना–1 सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मान (t)	सार्थक अन्तर 0.05=0.01	निष्कर्ष
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	300	89.00	7.36	2.33	0.05=1.96	अस्वीकृत
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	300	90.00	6.91		0.01=2.58	स्वीकृत

(df = N1+N2-2) = 300+300-2 = 598

तालिका 1 में सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित आंकड़ें दिये गये हैं तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता के अंश 598 पर टी–मान 2.33 प्राप्त हुआ। जो 0.05 स्तर पर सार्थक टी मान से अधिक है एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान से कम है। अतः परिकल्पना 0.01 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना–2 सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मान (t)	सार्थक अन्तर 0.05=0.01	निष्कर्ष
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	300	37.00	4.43	17.94	0.05=1.96	अस्वीकृत
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	300	31.00	3.76		0.01=2.58	अस्वीकृत

(df = N1+N2-2) = 300+300-2 = 598

तालिका 2 में सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बन्धित आंकड़ें दिये गये हैं तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता के अंश 598 पर टी–मान 17.94 प्राप्त हुआ। जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी मान से अधिक है। अतः परिकल्पना दोनों स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया।

प्राप्त निष्कर्षों से पता चलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जिसका कारण सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एक समान होना है। तथा सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। जिसका कारण कच्ची बस्ती के निजी विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों का समायोजन सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों से उच्च होना है। अतः कच्ची बस्ती के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन में सुधार हेतु, अभिभावकों, शिक्षकों, समाज को प्रयत्न करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भार्गव, महेश (2002) : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा, भार्गव बुक हाऊस।
2. दीक्षित, बी. एम. एवं भार्गव, महेश (1980) : मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक सांख्यिकी की तालिकाएँ, आगरा, हरप्रसाद भार्गव।
3. कपिल, एच. के. (1979) : अनुसंधान विधियाँ, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. लवनियां, एम. एम. (1989) : भारत में सामाजिक समस्याएँ, जयपुर, कॉलेज बुक डिपो।
5. Indian Educational Abstract, NCERT, 1992
6. Indian Education Review, (23), (2), 1993
7. Journal of Agriculture Review/dharwad/2007
8. Journal of Educational & Psychological Research, Jan. 2013

❖◆❖